भजन

तर्ज– अपनी आंखों में बसाकर

तेरे दरबार के जैसा कोई दरबार नही
मजहबो मिल्लत की यहां कोई भी दीवार नही

1–ये वो दर है जहां चारों वर्ण आते हैं
एक प्रीतम के सभी मिल के गीत गाते है
प्यार ही प्यार यहां पर कोई तकरार नही

2–प्राणनाथ पल में शफा देते हैं बीमारों को
एक सजदे में बख्शते है गुनाहगारो को
होती रहमत की यह बरसात बार बार यहीं

3–वैर नफरत के अन्धेरो से निकाले प्रीतम
ज्ञान दे दे के किये तुमने उजाले प्रीतम
इस हकीकत से किसी को इन्कार नही

4–दौर ये वो है लहू सस्ता महंगा पानी है
वक्त में ऐसे आप आये मेहरबानी है
अंगना को झूठे जहां में कोई करार नही